(1)

B.A (Hons) Part II
Philosophy Paper IV

Topic: देकार्त का ईश्वर संबंधि अस्तित्व का प्रमाण

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Mokama.

देकार्त ने ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित प्रमाण दिये है। देकार्त ने कहा है कि हमारे अन्दर आन्तरिक (Innate) भावना है जो काफी महत्वपूर्ण है। इसी आन्तरिक भावना का संबन्ध एक ऐसी सत्ता से है जो शाश्वत, पूर्ण, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापक है। अब प्रश्न उठता है कि व्याख्या कैसे किया जाय? देकार्त का कहना है कि मैं एक अपूर्ण जीव हूँ। अत: इस पूर्णसत्ता को भावना ने ही मुझे उत्पन्न किया है। अत: निश्चय ही पूर्ण और परम सत्ता है जिसे हम ईश्वर कहते हैं।

फिर देकार्त ने विश्वसंबंधि (Cosmological) प्रमाण भी दिया है। इस प्रमाण के माध्यम से यह बतलाने का प्रयास किया गया है कि कौन मेरा, मेरे माता-पिता तथा संसार की अन्य वस्तुओं की रचना की है? देकार्त का कहना है कि मैं खुद अपना सृष्टिकर्ता

नहीं हो सकता क्योंकि मैं अपनी सृष्टि स्वयं करता तो मैं अपने को पूर्ण बनाता क्योंकि मुझमें पूर्णता की भावना है। अतः यह कहा जाता है कि मेरी सृष्टि मेरे माता-पिता के द्वारा हुई है और उनकी सृष्टि उनके माता-पिता के द्वारा हुई है। इस प्रकार यह क्रम चलता रहेगा ~~नहीं तो~~ लेकिन इसे कहीं न कहीं रुकना होगा नहीं तो अनवस्था दोष उत्पन्न हो जायेगा, इसलिए अनवस्था दोष से बचने के लिए ईश्वर को मानना आवश्यक है।

फिर देकार्त ने तत्व संबंधी प्रमाण (ontological) भी दिया है और कहा है कि भावना और तदनुरूप अस्तित्व में अवियोज्य संबंध है। हमारे अन्दर पूर्ण सत्ता की भावना है तो अनुरूप पूर्ण सत्ता का अस्तित्व भी अवश्य होना चाहिए क्योंकि यदि पूर्ण सत्ता की भावना केवल ~~काल्प~~ काल्पनिक हो तो उस काल्पनिक भावना को पूर्ण सत्ता की भावना नहीं कहा जा सकता है। पूर्णता और अभाव दोनों एक साथ नहीं हो सकते। देकार्त का कहना है कि वही पूर्ण सत्ता की भावना है जिसके अनुरूप भाव भी है अर्थात् जिसका अस्तित्व है। जिस प्रकार हमारे अन्दर पूर्ण सत्ता की भावना है उसी प्रकार ईश्वर का अस्तित्व भी है।